

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज

शनिवार 09 सितम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग: सच (Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता में वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ा है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं
अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

आतंकियों को मुंहतोड़ जवाब: जम्मू-कश्मीर में पुलिस टीम पर हमला

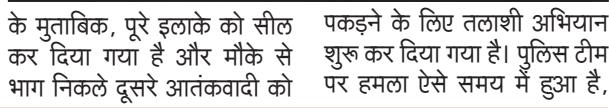
जवाबी कार्रवाई में लश्कर का एक आतंकी ढेर

नई दिल्ली (एजेंसी)। श्रीनगर के नाटोपोरा इलाके में आतंकियों ने शुक्रवार रात पुलिस टीम पर हमला कर दिया। जवाबी कार्रवाई में लश्कर का एक आतंकी मारा गया। उसका साथी भागने में कामयाब रहा। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि पर गए आतंकी से व्यथियार और गोला बारूद बराबर किया गया है। उसके पास एक आइडी कार्ड मिला है। इससे पता चला कि वह द्रेज शापियों का रहने वाला था। उसका नाम आकिब बोरी कुमार था और वह प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा था। पुलिस

पिछले एक हफ्ते में आतंकी 5 आम लोगों की हत्या कर चुके हैं

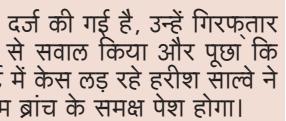


श्रीनगर में एक कश्मीर पंडित दवा कारोबारी, दो टीचर भी मारे गए



मर्डर केस में गिरफ्तारी क्यों नहीं, आपके एक्शन से हम असंतुष्ट, योगी सरकार को एससी की फटकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी कांड में चार किसानों सहित आठ लोगों की हत्या मामले की सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। लखीमपुर कांड पर यूपी सरकार की कार्रवाई से सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी और सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह लखीमपुर खीरी हिस्से मामले में उत्तर प्रदेश सरकार कर्दमों से संतुष्ट नहीं है। लखीमपुर खीरी हिस्से मामले में जिन आरोपियों के खिलाफ प्राधिकारी दर्ज की गई है, उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाने को लेकर उच्चतम न्यायालय ने उत्तर प्रदेश सरकार से सवाल किया और पूछा कि आपके द्वारा किया गया है। योगी सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में केस लिया गया है।



लखीमपुर कांड के पीड़ितों के परिजनों से मिले सीजेआई

मीडिया हाउस के गलत ट्रैट पर एससी की टिप्पणी, कुछ लोग हृद पर रहे हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के मुख्य न्यायाधीश एन वी रमन ने लखीमपुर खीरी के पीड़ितों के परिजनों से मुलाकात की है। इस बात का दावा एक मीडिया हाउस ने अपने ट्रैट में किया था। लेकिन दावा गलत पाया जाने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने इस ट्रैट को लेकर नाराजगी जाहिर की है। शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वो मीडिया और उनकी आजादी का सम्मान करती है लेकिन यह पूरी तरह निष्पक्ष नहीं है। लखीमपुर खीरी से ही जुड़े एक मामले की सुनवाई के दौरान देश की सबसे बड़ी अदालत ने इस ट्रैट को बेटदुर्भायपूर्ण कहा और साथ ही साथ यह भी कहा कि मीडिया को तथ्यों की जांच-पट्टाल करनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी टिप्पणी में कहा कि, हम ऐसा लगता है कि कुछ लोग बोलने की आजादी की



उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया था।

मुलाकात की है। उत्तर प्रदेश सरकार की जांच-पट्टाल करनी चाहिए। यह पूरी तरह से गलत दिखाया जा रहा है। मुख्य न्यायाधीश, जस्टिस सूर्योदात और हिमा कोहली की एक संयुक्त बैठक नहीं है।

चौपाल ने एक मीडिया एन वी रमन के द्वारा किया गया था। मैंने अपने बारे में भी कुछ ऐसे ट्रैट कर देखा है।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने लखीमपुर खीरी हिस्से मामले को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार से कहा, 'आप क्या संदेश दे रहे हैं?' उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बताएं जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है। इसे वर्ती... हमें इन सब खीरों में नहीं पड़ा जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में हमें यह सब मिलते ही रहेंगे।

सीजेआई ने कहा कि यह सब जीवन का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की ओर से पैश हुए वरिष्ठ वकील रहीशी की साथ आपका बत

सम्पादकीय

सौ साल की मेहनत

हालांकि इससे बचाव के उपाय भी कम नहीं किए जाते। 2019 में ही मलेरिया नियन्त्रण व उन्मूलन पर तीन अरब डॉलर खर्च किए गए। मगर इसके बावजूद इन देशों में मलेरिया का आतंक कायम है। निश्चित रूप से उन इलाकों के लोगों के लिए यह टीका वरदान बनकर आया है। फिर भी सारी उम्मीदें इसी पर टिका देना समझदारी नहीं होगी। एक बेड पर तीन-तीन बच्चे, परिजनों के लिए बैठने तक की जगह नहीं, गवालियर में बिगड़े हालात बीमारियों के खिलाफ चलने वाले मनुष्यता के सतत संघर्ष में एक अहम पड़ाव बुधवार को तब आया, जब डूब्यूएचओ ने मलेरिया के टीके आरटीएसएस को अपनी मान्यता दी दी। वैसे से तो भाति-भाति के तिषाणुओं और जीताणुओं पर काम करने वाले कई टीके पहले से मौजूद हैं, लेकिन यह पहला मौका है जब डूब्यूएचओ ने व्ह्यूमन पैरासाइट के खिलाफ किसी टीके के व्यापक उपयोग की सिफारिश की है। इसकी वैज्ञानिक अहमियत इस बात से समझी जा सकती है कि रिसर्चर्स पिछले सौ साल से इस बीमारी का प्रभावी टीका बनाने की कोशिश में लगे थे।

मलेरिया से हमारा वास्ता लंबे समय से पड़ता रहा है और तमाम उपायों की बदौलत आज भले यह अपने खौफनाक रूप में नजर न आता हो, लेकिन एक समय था, खासकर 50 का दशक जब भारत में भी सालाना मलेरिया के सात करोड़ से ज्यादा मामले सामने आते थे और आठ लाख तक मौतें दर्ज की जाती थीं। अब भारत में उतना बुरा हाल नहीं है लेकिन दुनिया भर में अब भी इससे हर साल करीब चार लाख मौतें होती हैं। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव अफ्रीकी देशों में है। वहां पांच साल से कम उम्र के बच्चे इसका सबसे ज्यादा शिकार बनते हैं। हालांकि इससे बचाव के उपाय भी कम नहीं किए जाते। 2019 में ही मलेरिया नियंत्रण व उन्मूलन पर तीन अरब डॉलर खर्च किए गए। मगर इसके बावजूद इन देशों में मलेरिया का आतंक कायम है। निश्चित रूप से उन इलाकों के लोगों के लिए यह टीका वरदान बनकर आया है। फिर भी सारी उम्मीदें इसी पर टिका देना समझदारी नहीं होगी। वैसे पायलट प्रोग्राम के दौरान इसके नतीजे उत्साहवर्धक रहे हैं, लेकिन फिर भी इसकी अपनी सीमाएं हैं। पहली बात तो यह समझने की है कि मलेरिया पैरासाइट के सौ से अधिक प्रकार हैं। आरटीएसएस टीका इनमें से एक प्रायंगोडियम फाल्सिपैरम पर ही कारगर है, हालांकि यही सबसे खतरनाक माना जाता है और अफ्रीकी देशों में सबसे ज्यादा प्रकोप भी इसी का होता है। दूसरी बात यह कि इस वैक्सीन के प्रभावी होने के लिए हर बच्चे को इसका चार डोज देना जरूरी होगा। इनमें से पहले तीन डोज क्रमशः पांच, छह और सात महीने की उम्र में तो चौथा डोज 18वें महीने में देने की जरूरत होगी। दूरदराज के इलाकों में बच्चों को समय से चारों डोज लगाना व्यवहार में आसान नहीं होगा। वैसे, अच्छी योजना बनाकर इस मुश्किल का हल निकाला जा सकता है। मलेरिया की नई दवाओं को लेकर भी हाल कोई अच्छा नहीं रहा। इस तरह के आरोप लगे कि दवा कंपनियों को खासतौर पर गरीब मुल्कों की इस बीमारी में बड़ा मुनाफा नहीं दिखा, इसलिए उन्होंने मलेरिया की नई दवाएं नहीं बनाई। जिस तरह से बच्चों की खातिर यह टीका आया है, कुछ वैसी ही पहल इस बीमारी की नई दवा बनाने को लेकर भी होना चाहिए।

लेफ्टनेंट जनरल फई और डब्ल्यू हमीद को आईएसआई चीफ पद से हटाकर इमरान खान ने चली है कौन-सी चाल ?

नीरज कुमार दुबे

इस समय फैज हमीद को पद से हटाये जाने पर तमाम तरह की अटकलें चल रही हैं लेकिन हम आपको बताते हैं कि क्यों हो गयी फैज हमीद की पद से छुट्टी। दरअसल आईएसआई चीफ की कुर्सी पाते ही फैज हमीद अपने आप को सबसे शक्तिशाली समझने लगे थे। पाकिस्तान में प्रधानमंत्री से ज्यादा महत्वपूर्ण है सेनाध्यक्ष और आईएसआई चीफ का पद। पाकिस्तान में भले दिखाने के लिए लोकतांत्रिक सरकार हो लेकिन देश को वहां के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री नहीं बल्कि सेनाध्यक्ष और आईएसआई के चीफ ही चलाते हैं। अब पाकिस्तान के इन दो महत्वपूर्ण पदों पर कौन बैठता है और हटाया जाता है इस पर सभी की नजरें रहती हैं इसलिए दुनिया तब चौंक गयी जब इस सप्ताह पाकिस्तानी सेना ने चौंकाने वाला कदम उठाते हुए शक्तिशाली खुफिया एजेंसी आईएसआई के प्रमुख लेफिटनेंट जनरल फैज हमीद को पद से हटाते हुए उनका तबादला कर दिया और उन्हें पेशावर कोर का कमांडर बना दिया। हम आपको बता दें कि फैज हमीद को 16 जून, 2019 को आईएसआई का प्रमुख नियुक्त किया गया था। उससे पहले उन्होंने आईएसआई में आंतरिक सुरक्षा के प्रमुख के रूप में काम किया था। फैज हमीद को सेना प्रमुख जनरल कमर बाजवा का करीबी माना जाता है इसलिए उन्हें हटाये जाने पर सबको आश्चर्य है।

इस समय फैज हमीद को पद से हटाये जाने पर तमाम तरह की अटकलें चल रही हैं लेकिन हम आपको बताते हैं कि क्यों हो गयी फैज हमीद की पद से छुट्टी? दरअसल आईएसआई चीफ की कुर्सी पाते ही फैज हमीद अपने आप को सबसे शक्तिशाली समझने लगे थे और जिन

कॉमन रूमः सोशल रहना है तो क्या छोड़ना होगा फेसबुक?

राहुल पाण्डेय

दुनिया भर में बहुत सारे लोगों का मानना है कि सोमवार रात फेसबुक अपने इंस्टा और वॉट्सेप सहित इसलिए गयब हुआ, क्योंकि उसे अपना वह डेटा गयब करना था, जिसकी रिपोर्ट हिसलब्लूअर फ्रांसेस हॉगन ने सोमवार को ही अमेरिकी कांग्रेस के सामने रखी थी। फ्रांसेस हॉगन ने फेसबुक से ही डिएटा के आधार पर कांग्रेस को बताया कि किस तरह से फेसबुक बच्चों और लोकतंत्र से खिलावा कर रहा है। सोमवार रात से मंगालवार सुबह तक चली तकरीबन सात घंटे के जद्दोजहद के बाद फेसबुक ने खुद को रीस्टोर तो कर लिया, लेकिन उसकी वेबसाइट और ऐप में बुधवार तक समस्याएं आती रहीं। इस तरह की वेबसाइट्स का हिसाब-किताब रखने वाली वेबसाइट डाउन डिटेक्टर डॉट कॉम पर बुधवार तक यूर्जस कंप्यून करते रहे। किसी का स्टेटस तीन-तीन बार अपलोड हो जा रहा था तो किसी का कॉमेंट ही गयब हो जा रहा था। खुद मेरी फेसबुक प्रोफाइल पर लोग बुधवार तक इन्हीं समस्याओं से जूझते दिखे। दुनिया भर से डेढ़ करोड़ से भी अधिक लोगों ने इस प्रौद्योगिकी कंप्यून की और सभी यह जानना चाहते हैं कि आखिर ऐसा हुआ क्यों? लेकिन अपनी आदत से

वेद प्रताप वैदिक

अब से 5-6 साल पहले 'पनामा पेपर्स' ने सारी दुनिया में तहलका मचा दिया था, अब उससे भी बड़ा भंडाफोड़ हुआ है- 'पैडोरा पेपर्स'। 'पनामा पेपर्स' से तो पनामा नामक देश की वजह से जाने गए, लेकिन 'पैडोरा पेपर्स' तो पैडोरा नामक मिथकीय यूनानी महिला पैडोरा के नाम से जाने जा रहे हैं। यूनानी देवता प्रोमिथियस ने पैडोरा नामक परम सुंदरी को एक ऐसा बक्सा भेट किया था, जिसमें दुनिया की सारी बुराइयां छिपा रखी थीं। विदेश में दुनिया के अमीरों ने जो मिल्कियत छुपा रखी है, उसकी जानकारी एक खोजी पत्रकार संगठन लेकर आया है। जिन दस्तावेजों की जानकारी इस संगठन ने सार्वजनिक की है, उसे ही 'पैडोरा पेपर्स' कहा जा रहा है।

इस खोजी पत्रकार संगठन ने 14 कंपनियों के लगभग सवा करोड़ दस्तावेजों की जांच करके 2900 बैंक-खातों को पकड़ा है। इन खातों में गरीब और अमीर देशों के सैकड़ों लोगों ने 130 बिलियन डॉलर जमा कर रखे हैं। जमा करने वाले ये लोग कौन हैं? इनमें कई देशों के बादशाह, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, नेता और उद्योगपति तो हैं ही, उनके साथ कई आतंकवादी, तस्कर, फौजी, सरकारी अधिकारी, फिल्मी और खिलाड़ी लोग भी शामिल हैं। अगर भारत के 380 खाते पकड़े गए हैं तो पाकिस्तान के 700 से भी ज्यादा खाते विदेशी बैंकों में पकड़े गए हैं। ये खाते अपने-अपने देशों में नहीं हैं। विदेशों में हैं। कुछ अपने नाम से हैं। कुछ फर्जी नाम से हैं और कुछ न्यासों (ट्रस्टों) और कंपनियों के नाम से हैं। अधिकतर खाते ऐसे छोटे-मोटे देशों में हैं, जिनके नाम कभी आपने कभी नहीं सुने होंगे। जैसे बहामा, सेंट किट्स, सेंट बार्थेलेमी, वनातूआ, वर्जिन आइलैंड, नौरु, बरम्डा आदि। इन देशों में लोग अपना धन इसलिए छिपाते हैं कि एक तो उन्हें वहां आयकर नहीं देना पड़ता और दूसरा कारण यह है कि उनकी गोपनीयता बनी रहती है। किसी को पता ही

कारण यह है कि उनका गोपनीयता बना रहता है। किसी का पता हा-
नहीं चलता कि किसका पैसा कहां छिपा हुआ है। उद्योगपति और
व्यापारी तो सिर्फ टैक्स बचाने के लिए अपना पैसा इन देशों में छिपाते हैं।

गाड़ी का कांच फूट

अनुराग मिश्र

लखीमपुर खीरी का वह दिल दहला देने वाला हत्याकांड किसी के भी
रोंगटे खड़े कर सकता है। एक के बाद एक वीडियो आ रहे हैं। तस्वीरें
विचलित करती हैं। हो सकता है पहली नजर में आप आंखें सिकोड़ कर
भौंहों के अंदर दबा लें। मंजर ही कुछ ऐसा दिखता है। 8 लोगों की
दर्दनाक मौत हो गई। जैसा बताया जा रहा है उसके मुताबिक 4 किसानों
को गाड़ी से कुचला गया और बाद में 4 लोगों की पीटेकर हत्या कर दी
गई। पर अपने देश और प्रदेश की विडंबना देखिए वीडियो में लाइव प्लफ़
है कि गुस्से में दांत पीसते हुए ड्राइवर पैदल चल रहे किसानों पर थार
गाड़ी दौड़ा देता है, पर साफ-साफ कोई कह नहीं रहा कि यह जानबूझकर
की गई हत्या हो सकती है। कुत्ता भी दूधीलर के नीचे आ जाए तो
शरीर में कंपकंपी दौड़ जाती है और झट से ब्रेक पर पांव चला जाता है।
टिवटर पर जाकर फिर से वीडियो देखिए क्या दनदनाते हुई आई दोनों
गाड़ियों के ड्राइवर ने ब्रेक लगाने की कोशिश की थी? हटूर बजाने का
अधिकार कैसे मिल गया, इस पर तो कोई सवाल कर ही नहीं रहा।
जांच का विषय है, दूसरा ऐंगल आपको पता है क्या? ये सब कांग्रेस की
चाल है? मंत्रीजी के खिलाफ साजिश है? ऐसे पता नहीं कितने तर्क और
जवाब आपको सोशल मीडिया पर मिल जाएंगे। हो सकता है इसमें
किसानों की साजिश हो, खालिस्तान का हाथ हो, पाकिस्तान से फंडिंग

अनुराग मिश्र

लखीमपुर खीरी का वह दिल दहला देने वाला हत्याकांड किसी के भी रोंगटे खड़े कर सकता है। एक के बाद एक वीडियो आ रहे हैं। तस्वीरें विचलित करती हैं। हो सकता है पहली नजर में आप आंखें सिकोड़ कर भौंहों के अंदर दबा लें। मंजर ही कुछ ऐसा दिखता है। 8 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। जैसा बताया जा रहा है उसके मुताबिक 4 किसानों को गाड़ी से कुचला गया और बाद में 4 लोगों की पीटकर हत्या कर दी गई। पर अपने देश और प्रदेश की विडंबना देखिए वीडियो में लाइव प्लफ है कि गुस्से में दांत पीसते हुए ड्राइवर पैदल चल रहे किसानों पर थार गाड़ी ढौंका देता है, पर साफ-साफ कोई कह नहीं रहा कि यह जानबूझकर की गई हत्या हो सकती है। कुत्ता भी दू छीलर के नीचे आ जाए तो शरीर में कंपकंपी दौड़ जाती है और झट से ब्रेक पर पांव चला जाता है। टिवटर पर जाकर फिर से वीडियो देखिए क्या दनदनाते हुई आई दोनों गाड़ियों के ड्राइवर ने ब्रेक लगाने की कोशिश की थी? हूटर बजाने का अधिकार कैसे मिल गया, इस पर तो कोई सवाल कर ही नहीं रहा। जांच का विषय है, दूसरा ऐंगल आपको पता है क्या? ये सब कांग्रेस की चाल है? मंत्रीजी के खिलाफ साजिश है? ऐसे पता नहीं कितने तर्क और जवाब आपको सोशल मीडिया पर मिल जाएंगे। हो सकता है इसमें किसानों की साजिश हो, खालिस्तान का हाथ हो, पाकिस्तान से फंडिंग

सेनाध्यक्ष बाजवा ने उन्हें यह कुर्सी दिलाई थी, फैज उनकी ही अनदेखी

करन लग गय था। पछल महान जब तालिबान न अफगानस्तान पर कब्जा कर लिया तो आईसआई चीफ के रूप में फैज हमीद काबुल पहुँच गये थे लेकिन इस यात्रा के लिए उन्होंने अपने बॉस कमर जावेद बाजवा से कोई मंजूरी नहीं ली थी। तालिबान की पार्टी में मस्ती करते फैज हमीद की तस्वीरों से पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय समदाय के बीच बड़ी किरकिरी हुई थी। अमेरिका भी इस बात से नाराज था कि पाकिस्तान ने तालिबान की मदद के लिए अपने बड़े अधिकारी को भेज दिया है जो इंटरनेशनल आंतकवादियों से गलबहियां करता दिख रहा है। यही नहीं इस पार्टी के दृश्य देखने के बाद बाइडेन प्रशासन को ऐसा महसूस हुआ था कि पाकिस्तान अफगानिस्तान में अमेरिका की नाकामी का जश्न मना रहा है। इस पार्टी में एक ब्रिटिश पत्रकार भी मौजूद थीं जिन्होंने जश्न मनाते फैज हमीद की कुछ ऐसी तस्वीरें ले ली थीं जिससे अमेरिका पाकिस्तान पर आग बबूला हो गया। यही नहीं जब पत्रकार ने फैज से सवाल पूछा था तो उन्होंने उत्तर में कहा था- ‘ऑल इंज वेल’। यह जवाब पूरी दुनिया को चौका गया था क्योंकि काबुल से जिस तरह की तस्वीरें सामने आ रही थीं उससे पूरी दुनिया अफगानियों की सुरक्षा को लेकर चित्तित थी और फैज हमीद कह रहे थे कि सब ठीक है। देखा जाये तो फैज हमीद की कुर्सी ऐसे समय गयी है जब अगले साल वह सेनाध्यक्ष बनने वाले थे। इमरान खान भी फैज हमीद से काफी प्रसन्न थे लेकिन जब फैज उड़ने लगे तो उनके पर कतर दिये गये। फैज और बाजवा में मतभेद तब शुरू हुए थे जब रावलपिंडी में पाकिस्तानी सेना के एक हाउसिंग प्रोजेक्ट को लेकर विवाद हुआ था। इसके अलावा जब इमरान खान ने सेनाध्यक्ष के रूप में बाजवा का कार्यकाल बढ़ा दिया तो फैज हमीद नाराज हो गये थे और कई बार खलकर उन्होंने यह नाराजगी ज़ाहिर की थी और

लेकिन तेवा ?पाच्यांचे वस्त्रांचे अपतंकीती और आपाचांचे ?पाचा ?पौर्णिमा का दर न ठोको रुद्धे आपाची कमाई शिखावे का कोर्ट कराया नव्ही ते।

लोकन नता, अफसर, तस्कर, आतंकवाद और अपराधा अपना जनातक और अवैथानिक तरीकों से अर्जित धन वहां छिपाते हैं। इसीलिए जब कुछ भारतीय अखबारों में कुछ उद्योगपतियों और खिलाड़ियों के नाम उजागर हुए, तो उन्होंने सफाई पेश करनी शुरू कर दी। जो उदयोगपति खुद को दिवालिया घोषित कर चुके हैं, उनके भी वहां करोड़ों-अरबों रुपये पाए गए हैं। बीजेपी सरकार ने इस तरह के खाताधारियों के विरुद्ध 2015 में कड़े कानून बनाए थे। लेकिन क्या वजह है कि अभी तक न तो पनामा पेपर्स के दौषियों के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई हुई है और न अभी तक 'पैंडोरा पेपर्स' के नामों को उजागर किया गया है। जो कुछ नाम एक भारतीय अंग्रेजी अखबार ने उजागर किए हैं, उनमें भी न नेताओं के नाम हैं, न आतंकवादियों के और न ही अफसरों के। जिसका भी खाता इन विदेशी बैंकों में हो, उसका नाम बताने में संकोच की ज़रूरत क्या है? सांच को आंच कैसी? जरा मालूम तो पड़े कि भारतीयों के 20 हजार करोड़ डॉलर वहां जमा हैं तो किसके कितने हैं?

जरा गौर करें कि पाकिस्तान के दर्जनों नेताओं, मंत्रियों, फौजियों, अफसरों और दलालों के नाम उजागर हो चुके हैं, लेकिन भारतीयों के नाम पता नहीं चल रहे। इसका कारण यह भी हो सकता है कि अगर नेताओं और अफसरों के नाम उजागर हो गए तो शायद किसी भी पार्टी की कमीज सफेद न पाई जाए। पूरे कुएं में ही भांग पड़ी हुई है। बोफोर्स के लेन-देन में चाहे असली लोग बच गए, लेकिन लोगों को पता चल गया कि राजनीति लंबे-चौड़े लेन-देन के बिना चल ही नहीं सकती। पैंडोरा पेपर्स कांड में सामने आए पाकिस्तानी नामों से यह तर्क अपने आप सिद्ध हो जाता है। विदेशी बैंकों में यह पैसा नेता और अफसर लोग इसलिए छिपाते हैं कि इसका पता किसी को भी नहीं चले। यदि यह पैसा उसी तरह भारत में भी छिपाकर रख सकते हों तो शायद टैक्स भरने में भी उहें कोई एतराज न हो, क्योंकि उनके सैकड़ों विश्वसनीय अनुयायियों के नाम से वे खाते खोलकर टैक्स बचा सकते हैं, लेकिन वे अपने साथियों को भी इस गुप्त धनराशि का सुराग नहीं लगने देना चाहते। लेकिन व्यापारियों और उद्योपतियों को यदि आयकर भरने का डर न हा ता उन्ह अपना कमाइ छान का काइ कारण नहा हा दुनिया के 23 देश ऐसे हैं, जिनमें आयकर नाम की कोई चीज ही नहीं है। लेकिन अधिकतर वे सभी छाटे-छोटे देश हैं। उनके सरकारी खर्च भी कम हैं, मगर भारत-जैसे बड़ी जनसंख्या वाले और विशाल देश की सरकार यथेष्ट आमदनी के बिना कैसे चल सकती है? अपनी यथेष्ट आमदनी की खातिर ही इंदिरा-राज में आयकर की दर लगभग गलाघोंटू बन गई थीं। अब भी सरकार को आयकर से हर साल लगभग 11-12 लाख करोड़ रुपये मिलते हैं। यदि सब लोग अपना आयकर ईमानदारी से भरें तो सरकार की आमदनी डेढ़ी-दुगुनी हो सकती है। आयकर नहीं भरने या बचाने की इच्छा ही काल धन की जननी है। इस काले धन को खत्म करने के लिए ही मोदी सरकार ने नोटबंदी का जर्बर्दस्त कदम उठाया था, लेकिन वह सफल नहीं हो सका। नोटबंदी का विचार जिन लोगों ने चलाया था, उनकी सारी शर्तें सरकार लागू कर देती तो शायद कालेधन पर लगाम लग सकती थी। लेकिन अब काला धन रखना ज्यादा आसान हो गया है। एक हजार का नोट खत्म किया, लेकिन सरकार ने उसकी जगह दो हजार का नोट चला दिया। नोट बदलवाने की लाइनों में खड़े सैकड़ों लोगों ने दम तोड़ दिया। नए नोट छपने में हजारों करोड़ रुपये नए सिरे से खर्च हो गए। यदि सरकार 100 रुपये को डॉलर की तरह सबसे बड़ा नोट बनाए, बैंकिंग को बढ़ावा दे और बैंक के लेन-देन पर नाम मात्र का टैक्स लगाए तो उसके पास आयकर से भी बड़ा पैसा जमा हो सकता है। इसके अलावा आयकर से ज्यादा वह जायकर (खर्च पर टैक्स) पर जोर दे तो सरकारी खजाना भर जाएगा। मालदार और मध्यमवर्गीय लोग फिजूलखर्ची कम करेंगे और उससे भारी बचत होगी। बचत का यह पैसा उदयोग-धन्धों में लगेगा और करोड़ों नए रोजगार पैदा होंगे। लोग अपने धन को छिपाने से बाज आएंगे। जब धन काला नहीं होगा तो उसे वे छिपाएंगे क्यों? विदेशी बैंकों में पैसा छिपाने की कोशिश अपने आप अनावश्यक हो जाएगी और भारत का भद्रलोक उपभोक्तावाद की चक्की में पिसने से भी बचेगा।

ए भी था तो क्या कुचल दोगे भइया?

हो वगैरह वगैरहछड़इस पर जांच चल रही है और होनी चाहिए, लेकिन कम से कम जो सच दिख रहा है उसे हम सच क्यों नहीं कह पा रहे। अगर 4 किसानों की कुचलकर हत्या की गई तो कम से कम यह तो बोलिए। हां, इसके बाद की गई भीड़ हिंसा को भी जायज नहीं ठहराया जा सकता लेकिन जिस तरह का प्लफ़ फिलहाल हमारी आंखों के सामने है उसमें यह तो साफ़ है कि किसान शांतिपूर्ण ढंग से चले जा रहे थे और पीछे से दूटर बजाते हुए गाड़ीवाला अपनी सनक में आता है और पता नहीं क्यों किसानों पर अपनी खीझ उतारता है।

तर्क दिया जा रहा है कि आपको दिखाई नहीं दे रहा जीप या थार का कांच टूटा हुआ था। और यह कहकर इस बात को जायज ठहराने की शर्मनाक कोशिश हो रही है कि किसानों पर गाड़ी दौड़ाना गलत नहीं बल्कि परिस्थितिजन्य था, हां मतलब किसानों ने पत्थर मारा तो जान बचाने के लिए गाड़ी के ड्राइवर को किसानों को मौत के घाट उतारना पड़ा। इतना तो 90 के दशक में तहकीकात, ब्लॉमकेश बख्ती देखने से लेकर जासूसी सीरियल देखने वाली आज की पीढ़ी भी समझ सकती है कि पीछे से आने वाली गाड़ी को भला आगे चल रहे किसानों से कौन सा खतरा पैदा हो सकता है? अगर उसी रास्ते में पीछे भी किसान थे और उन्होंने हमला किया था तो क्या आगे चल रहे निर्दीश लोगों पर गाड़ी दौड़ाने की छूट मिल जाती है? इस दौरान यह भी हल्के में नहीं लिया जा सकता कि चार और लोगों की जानें गई थीं। जितनी किसानों की जान कीमती थी उन्हीं ही उन लोगों की जिन्हें बाद में पीट-पीटकर मारा गया।

यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए था। अब जरा पिछले कुछ वर्षों में भीड़ हिंसा यानी मॉब लिंचिंग की घटनाओं को याद कीजिए। गोमांस या बच्चे चुराने की अफवाह में लोगों ने कैसे धेरकर जानें ली है। ऐसे में जब अपनी आंखों के सामने कीड़े-मकोड़े की तरह बुजुर्ग-युवाओं पर गाड़ी दौड़ाते लोगों ने देखा होगा तो उनका खून कितना खोल गया होगा और गुस्से का पारा कितना चढ़ गया होगा, यह अंदाजा लगाना कोई मुश्किल काम नहीं है। यहां सच को कोई सच नहीं कह रहा। चूंकि मंत्री जी है और एक पार्टी की सरकार है, ऐसे में पार्टी के समर्थक वीडियो देखने के बाद भी तर्क गढ़ रहे हैं। शर्मनाक यह भी है कि मीडिया का एक वर्ग भी तथ्यों को अनदेखा करने की कोशिश कर रहा है। स्ट्रॉ, अटकलों और चर्चाओं पर खबर परोसने वाले मीडिया संस्थान की लोगों ने भी खूब मजम्मत की है। अखबार की हैंडिंग लाइट वीडियो को भी शक की निगाह से देखती लगती है। पक्ष या विपक्ष में होने से पहले जरा सोचिए 8 निर्दीश लोगों की जानें गई हैं। मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा है। जांच हो रही है। उम्मीद है कि सच सामने आएगा कि किसानों ने पहले पथरावाजी और मारपीट की था या गाड़ी पहले दौड़ाई गई। बात-बात पर गांधी, शास्त्री, पटेल का नाम जपने वालों को यह भी समझना चाहिए कि आरोप लगे तो कुर्सी छोड़ना नैतिकता कही जाती है। आरोप झूठे निकलें और आप जांच में बरी हाँ तो समर्थकों के कंधों पर बैठकर धूमधाम से फिर कुर्सी को सुशोभित कीजिए। आपका कद जनता की नजर में और बढ़ जाएगा पर यहां तो पक्ष में नैरेटिव सेट करने की कोशिश हो रही है। लग रहा है जैसे सच भी सोचकर बोला जाता है।

गाड़ी का कांच फूटा भी था तो क्या कुचल दोगे भइया?

यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए था। अब जरा पिछले कुछ वर्षों में भीड़ हिंसा यानी मॉब लिंचिंग की घटनाओं को याद कीजिए। गोमांस या बच्चे चुराने की अफवाह में लोगों ने कैसे घेरकर जानें ली है। ऐसे में जब अपनी अंखों के सामने कीड़े-मकोड़े की तरह बुजुर्गों-युवाओं पर गाड़ी दौड़ाते लोगों ने देखा होगा तो उनका खून कितना खौल गया होगा और गुस्से का पारा कितना चढ़ गया होगा, यह अंदाजा लगाना कोई मुश्किल काम नहीं है। यहां सच को कोई सच नहीं कह रहा। चूंकि मंत्री जी हैं और एक पार्टी की सरकार है, ऐसे में पार्टी के समर्थक वीडियो देखने के बाद भी तरक्कि गढ़ रहे हैं। शर्मनाक यह भी है कि मीडिया का एक वर्ग भी तथ्यों को अनदेखा करने की कोशिश कर रहा है। सत्रों, अटकलों और चर्चाओं पर खबर परोसने वाले मीडिया संस्थान की लोगों ने भी खबर मजम्मत की है। अखबार की हेडिंग लाइव वीडियो को भी शक की निगाह से देखती लगती है। पक्ष या विपक्ष में होने से पहले जरा सोचिए 8 निर्दीष लोगों की जानें गई हैं। मामला सुधीम कोर्ट तक पहुंचा है। जांच हो रही है। उम्मीद है कि सच सामने आएगा कि किसानों ने पहले पत्थरबाजी और मारपीट की था या गाड़ी पहले दौड़ाई गई। बात-बात पर गांधी, शास्त्री, पटेल का नाम जपने वालों को यह भी समझना चाहिए कि आरोप लगे तो कुर्सी छोड़ना नैतिकता कही जाती है। आरोप झूठे निकलें और आप जांच में बरी हाँ तो समर्थकों के कंधों पर बैठकर धूमधाम से फिर कुर्सी को सुशोभित कीजिए। आपका कद जनता की नजर में और बढ़ जाएगा पर यहां तो पक्ष में नैरेटिव सेट करने की कोशिश हो रही है। लग रहा है जैसे सच भी सोचकर बोला जाता है।

जिस साड़ी को हम ठुकरा रहे हैं आज
दुनिया के कई देश उसे अपना रहे हैं

अशोक मध्यप

आज समय बदल रहा है। जींस पैट शर्ट, पंजाबी सलवार-सूट ज्यादा पहने जाने लगे। साड़ी को पहनने की परेशानी से बचने के लिए महिलाओं और युवतियों ने टॉप-जीन्स, सलवार-सूट स्वीकार कर लिया। भारतीय महिलाओं का सबसे पसंदीदा परिधान साड़ी अब समारोह में पहनी जाने लगी। हाल ही में दिल्ली के एक रेस्टोरेंट में एक महिला को इसलिए प्रवेश नहीं दिया गया कि वह साड़ी पहने थी। समाचार आया। बड़ा अजीब-सा लगा। भारत में महिलाओं की वेशभूषा में सदियों से साड़ी स्वीकार्य है। महिलाएं साड़ी पहनती रही हैं। साड़ी का पहनावा भारतीय है। हालांकि क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग भी पहनावे रहे पर साड़ी भारतीयों की महिलाओं की पहचान मानी गई। साड़ी पहने महिला को रेस्टोरेंट में न जाने देना अजीब-सा लगा। लगा कि आधुनिकता में हम इतने रम गए कि हम अपना पहनावा, रहन सहन, वेशभूषा ही भूल गए। आज समय बदल रहा है। जींस पैट शर्ट, पंजाबी सलवार-सूट ज्यादा पहने जाने लगे। साड़ी को पहनने की परेशानी से बचने के लिए महिलाओं और युवतियों ने टॉप-जीन्स, सलवार-सूट स्वीकार कर लिया। भारतीय महिलाओं का सबसे पसंदीदा परिधान साड़ी अब समारोह में पहनी जाने लगी। साड़ी अब किसी समारोह या विवाह आदि में ही पहने जाने वाले परिधान में आ गई। हालांकि भारतीय महिलाओं को आज भी सबसे ज्यादा पसंद साड़ी ही है।

ज्यादा पसद साड़ी हा है। लगभग सात माल पहले श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के प्रतिनिधिमंडल में मुझे श्रीलंका जाने का अवसर मिला। सात दिन का प्रवास था। एक बड़े मॉल में हम खरीदारी करने के लिये गए। मॉल में लगभग सभी अडेंट महिलाएं थीं। उनमें एक-दो को छोड़ सब साड़ी पहने थीं। कुछ अजीब-सा लगा। भारत, जहां महिलाओं का पहनावा साड़ी है, वहां की युवतियां अब साड़ी नहीं पहनती। यहां शान के साथ युवतियां साड़ी पहने इयूटी कर रहीं हैं। श्रीलंका की संसद में हमारे लिए भोजन की व्यवस्था थी। भोजन के बाद संसद का भ्रमण भी कार्यक्रम में शामिल था। मैं देखकर आश्चर्यचकित था कि वहां कार्य करने वाली सभी युवतियां और महिलाएं साड़ी पहने हुए थीं। ऐसा लग रहा था कि श्रीलंका में नहीं भारत में खड़ा हूं। हमारी गाईड भी साड़ी पहने थी। हम कोलंबो के एक पार्क में जाते हैं। यहां एक नवयुगल फोटो शूट करा रहा है। युवती बहुत खूबसूरत रंगबिरंगी साड़ी पहने हुए हैं। श्रीलंका में घूमने के दौरान काफी तादाद में महिलाएं साड़ी पहने मिलीं। साड़ी श्रीलंका स्टाइल में अलग होती है। भारतीय से अलग श्रीलंकन साड़ी पहनती है। ये नीचे से लहंगा टाइप होती हैं। ऊपर से उसे साड़ी की तरह बांधती हैं। श्रीलंका की हमारी पत्रकार साथी सुधाषिनी डी सिल्वा ने बताया कि साड़ी श्रीलंका महिलाओं की नेशनल फ्रेस है। कई सरकारी और प्राइवेट कार्यालयों में भी महिलाओं के लिए साड़ी पहनकर ऑफिस आने के आदेश हैं। महिलाएं के लिये साड़ी पहनना गौरव की बात मानी जाती है। हमारे यहां साड़ी पहनने का प्रचलन कम होता जा रहा है, जबकि दूसरे देश वाले इस स्वीकार कर रहे हैं। 2012 में मैं नेपाल के होटल ड्रेगन में रुका था। ये एक चाइनीज होटल है। एक दिन सरेरे नाश्ते के दौरान मैंने और मेरी पत्नी ने दो चीन की लड़कियों को सफेद साड़ी पहने देखा।

